SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. SESSION – 2020-22

SUBJECT - C 11 (c) Guidance and counselling

TOPIC NAME – Type of Guidance

DATE - 28/01/22

(2) व्यवसायिक निर्देशन (Vocational Guidance) –

Introduction :- चूँकि मानव एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहकर ही तरह-तरह की क्रिया-कलापों या व्यवसाय के माध्यम से करता है व्यक्ति को जीने के लिए उसकी आधारभूत आवश्यकताएँ बहुत ही जरूरी होता है, इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए व्यक्ति को तरह-2 के व्यवसायों को करना पड़ता है।

अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास एवं आजीविका किसी न किसी व्यवसायों से प्राप्त धन पर ही निर्भर होता है जिसे अर्जित करने हेतु व्यक्ति शैक्षिक अवसरों या अन्य कार्य-कौशलों के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त कर पूरा करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त कर समाज में विकास कर सके।

★ **व्यवसायिक निर्देशन का अर्थ :- Meaning of Vocational Guidance)** :- व्यवसायिक निर्देशन में छात्रों या व्यक्तियों की योग्यताओं, कौशलों तथा शारीरिक संरचना के अनुरूप पाठ्यक्रमों एवं रोजगारों का चयन में सहायता करता है जिससे वे अपने जीवन में आर्थिक सफलता प्राप्त कर लक्ष्य की प्राप्ति करें।

अर्थात हम कह सकते हैं कि व्यवसायिक निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यवसाय चयन के लिए तैयार होने में, इसमें प्रवेश करने में तथा उसमें दक्षता प्राप्त करने में सहायता देता है। इसका मुख्य उद्देश्य जीविका-निर्माण तथा निर्णय लेने में सहायता करना होता है। यह निर्णय जिसके माध्यम से मानव में निहित शक्तियों को संचित एवं सुरक्षित रखा जा सकता है।

★ **व्यवसायिक निर्देशन की परिभाषा** :-

★ **नेशनल वोकेसनल गाइडेंस एसोसिएशन के अनुसार** :-

National Vocational Guidance Association :-

" व्यवसाय निर्देशन के द्वारा व्यवसाय को चुनने, उसके लिए तैयार करने, उसमें प्रवेश करने तथा उसमें विकास करने हेतु सूचना देने, अनुभव देने तथा सुझाव देने की प्रक्रिया है।"

में दी जाने वाली सहायता है। व्यावसायिक निर्देशन ...

* **मायर्स के अनुसार :-** "व्यावसायिक निर्देशन मुख्य रूप से वह प्रक्रिया है जो युवाओं की प्रकृति, रोजगारों तथा विद्यालयों में प्रदत्त प्रशिक्षण को संतुलित करती है।"

* **व्यावसायिक निर्देशन की विशेषताएं :-**

(1) व्यावसायिक निर्देशन के माध्यम से व्यक्ति में स्पष्ट बोध विकसित किया जाता है, इसके आधार पर व्यक्ति को यह ज्ञात हो जाता है कि उसका वास्तविक स्वरूप क्या है।

(2) व्यावसायिक निर्देशन के आधार पर कार्य के स्वरूप एवं कार्य से संबंधित व्यक्तियों के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है।

(3) व्यवसायिक निर्देशन एक प्रक्रिया है जो विभि. उद्देश्यों, साधनों, प्रविधियों इत्यादि को समन्वित रूप से ध्यान में रखकर सम्पन्न किया जाता है।

(4) व्यवसायिक निर्देशन के लिए आवश्यक जानकारी क्षमता, योग्यता आदि के संबंध में सूचनाएं एकत्र की जाती है।

(5) व्यवसायिक निर्देशन के द्वारा व्यक्ति एवं व्यवसाय दोनों का ही समान रूप से अध्ययन एवं मूल्यांकन किया जाता है।

* व्यवसायिक निर्देशन के उद्देश्य :-

(1) विद्यार्थियों को भिन्न -2 जीविकाओं के विषय में ऐसी सूचनायें एकत्र करने में सहायता प्रदान करना, जिन्हें वे चुन सकें।

(2) विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों का निरीक्षण करने की सुविधा प्रदान करना।

(3) निर्धन छात्रों को आर्थिक सहायता देकर उनकी व्यवसाय संबंधी योजना को सफल बनाना।

(4) विभिन्न व्यवसायों एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण संस्थानों से छात्रों को परिचित कराना।

(5) छात्रों में व्यवसायों संबंधी सूचनाओं का विश्लेषण करने की क्षमता का विकास करना।

* व्यवसायिक निर्देशन की आवश्यकता ~~[illegible]~~ :-

→ (i) वैयक्तिक भिन्नताओं की दृष्टि से
→ (ii) व्यावसायिक भिन्नता की दृष्टि से
→ (iii) समाज को परिवर्तित कराने
→ (iv) मानवीय क्षमताओं का वांछित प्रयोग हेतु
→ (v) व्यावसायिक प्रगति हेतु
→ (vi) स्वास्थ्य को बनाये रखने की दृष्टि से।
→ (vii) पारिवारिक एवं व्यावसायिक जीवन में सामंजस्य स्थापित करने हेतु।

व्यावसायिक निर्देशन के कार्य :-

→ (i) व्यवसायों का ज्ञान कराना (Knowledge of vocation)
→ (ii) व्यवसायों में प्रवेश की विधि का ज्ञान कराना। (Knowledge about the Entry in occupation)
→ (iii) व्यावसायिक सूचना प्रदान करना। (To Impart Vocational Informations)
→ (iv) प्रशिक्षण केंद्रों की जानकारी देना (Information Regarding Training Institutions)
→ (v) छात्र को आत्म ज्ञान कराना (Knowledge about Self)
→ (vi) व्यावसायिक समायोजन में सहायता करना) (Helping in Adjustment vocations)
→ (vii) व्यवसाय में प्रगति करने की विधियों का ज्ञान (Knowledge of Methods promotions in occupations)
→ (viii) व्यवसाय का संगठन (organisations of the occupations)

* **शैक्षिक दृष्टिकोण से व्यवसायीकरण की आवश्यकता एवं महत्व :-**

(1) शिक्षा का व्यवसायीकरण एक सशक्त यंत्र है, जैसे, शिक्षा एवं कैरियर का साथ-साथ चलना।

(2) इसके द्वारा छात्रों में अभिप्रेरणा का विकास होता है। साथ ही यह अध्यापन एवं रोजगार में संबंध का प्रत्यक्षीकरण करता है।

(3) इसके द्वारा पाठ्यक्रमों एवं कैरियर शिक्षा को समान्वित किया जाता है।

(4) इसके द्वारा वैकल्पिक अध्ययन आव्यूहों तथा अधिगम वातावरण को उत्पन्न किया जाता है ताकि छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

(5) इसके द्वारा ऐसी शिक्षा दी जाती है जिससे छात्र अपने जीवन काल के रोजगार - व्यवसाय का शिक्षा में समावेश कर लें।

(6) शिक्षा के व्यवसायीकरण से काम करने की आदत, धनात्मक अभिवृत्ति का विकास किया जाता है जिससे वे अपने रोजगार को प्रभावी ढंग से कर सके।

* **शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर व्यवसायिक निर्देशन (vocational Guidance At the different stages of Education) :-**

3

→ (1) प्राथमिक स्तर पर (Elementary Stage).

→ (2) माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर (Secondary and Senior Secondary stage)

→ (3) कॉलेज एवं विश्वविद्यालय स्तर पर व्यवसायिक निर्देशन (vocational Guidance at college and University stage)

(1) प्राथमिक स्तर पर व्यवसायिक निर्देशन :-

प्राथमिक स्तर पर व्यवसायिक निर्देशन नींव तैयार करता है। चूंकि पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या के माध्यम से आधारभूत कौशल तथा दृष्टिकोणों का विकास किया जाये तो कार्य में सफलता मिल सकती है। जैसे - सफाई का कार्य, एक-दूसरे के सहयोग से मिल-जुलकर कार्य करने की आदतों का विकास, कार्य के प्रति ईमानदारी एवं उचित दृष्टिकोणों का विकास इत्यादि गुणों के माध्यम से इस ओर उन्मुख किया जाता है।

प्राथमिक स्तर के वर्ग आठ में व्यवसायिक निर्देशन को ~~शामिल~~ पाठ्यक्रम में शामिल कर सकते हैं क्योंकि अनेक छात्र इस स्तर से विद्यालय छोड़ देते हैं अतः व्यवसायिक निर्देशन की ओर छात्रों को निर्देशित कर एक दिशा उन्हें लक्ष्य प्राप्ति हेतु सहायता प्रदान कर सकता है।

(2) माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर (Secondary and senior secondary level or stage) :- माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के अंतर्गत 9 वीं कक्षा से 12 वीं कक्षा तक के छात्र - छात्राएं आते हैं जिन्हें उनकी रुचियों के अनुरूप पाठ्यक्रम का चयन में सहायता प्रदान कर व्यावसायिक आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता है जो एक कुशल एवं प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक या निर्देशक के माध्यम से किया जाता है। समय - समय पर विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रमों का आयोजन कर उनकी कार्य कुशलता एवं रुचियों की जानकारी प्राप्त की जाती है और प्रदर्शनी या सांस्कृतिक कार्यक्रम या खेलकूद इत्यादि।

अतः माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक निर्देशन छात्रों के मानसिक योग्यता को देखते हुए दी जाती है।

(3) कॉलेज (महाविद्यालय) एवं विश्वविद्यालय स्तर पर व्यावसायिक निर्देशन (vocational guidance at college and University stages) :-

महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा के बारे में शिक्षाशास्त्रियों का विचार है कि केवल प्रतिभासम्पन्न छात्रों को ही यह शिक्षा

प्रदान की जानी चाहिए। प्रतिभा का समुचित विकास तभी संभव है जब शिक्षा व्यावसायिक दृष्टिकोण से प्रदान की जाये। तथा कॉलेज एवं विश्वविद्यालयी शिक्षा व्यावसायिक दृष्टि से नियोजित एवं संगठित हो। अधिकांश छात्रों के पास जीविकोपार्जन की समस्या होती है अतः उच्च शिक्षा के स्तरों पर छात्रों को उपलब्ध अवसरों एवं कार्य क्षेत्रों के विषय में व्यापक जानकारी उपलब्ध कराने में व्यावसायिक निर्देशन सहायक होता है। इसके अलावा उच्च पदों के लिए प्रावधान एवं राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विषय में नवीनतम जानकारी प्रदान कर उन्हें विभिन्न व्यवसायों के लिए निर्देशित किया जा सकता है।